लालकिले की प्राचीर से प्रधानमंत्री का भाषण

15.8.1958

बहिनों और भाईयो और बच्चो, हम बतलों,

आज फिर हमारी आजादी की ग्यारहवी सालगिरह है, और हम उसको मनाने को यहां जमा हुए हैं । मुबारक हो आपको यह दिन । लेकिन आप आये यहां और हम सब आये किस लिए आये, महज एक आदत पूरा करने, एक तमाशा देखने या किसी और नीयत से । ।। बरस हुए, जब पहले बार इस लाल किले के ऊपर हमारा कौमी झंडा फहराया था, वो एक खास दिन था हमारे इतिहास में और दुनियां के इतिहास में और खास दिन इसलिए था कि इतना बड़ा मुल्क आजाद हुआ, और इसलिए कि जिस तरह से वो आजाद हुआ, जिस शान से, जिस क्रान्ति से, वो भी एक अनोखी बात थी । दुनियां के सामने एक मिसाल सी हो गयी थी । हमारा सिर ऊंचा हुआ, दुनियां ने हमारी कदर की । ।। बरस हुए, और यह ।। बरस कशमकश के रहे, परेशानी के रहे । कुछ में भी यहां आके हमने यह दिन मनाया था । ग्यारह बरस हुए, और यह झंडा उठा, और हमारा दिल खुश था, कि आखिर में मंजिल पूरी हुई । लेकिन उस आजादी के दिन का अफताब गिरा नहीं था, गहब नहीं हुआ था, कि दूसरी तरह की खबरें हमारे पास आयीं । कहां, तो हम यह सोची करते थे कि हमने शान से सभ्यता से, अहिंसा से आजादी ली, कहां खबर हमारे पास आयी कि हमारे यहां, या हमारे पड़ौसी मुल्क में भाई भाई को मार रहा है, बहन बहन को मार रही है, और बच्चों को मार रहे हैं । एकदम से यह तस्वीर आयी, एक दूसरे ढंग की तस्वीर देखा कि कितने और वो झगड़ा फिसाद आपके और हमारे इस दिल्ली शहर तक फैला।

..2

हमने करीब फतह होती है हार से, क्योंकि अगर सुबह आफताब के निकलने के वक्त वह हमारे एक फतह की निशानी थी तो वही शाम हुई जब हमारी हार की भी झलक हमारे सामने आ गयी । हार थी दुश्मन से नहीं, दुश्मन पर हमने फतह पाई, हार थी अपनी कमजोरी से, अपनी ना इत्तफाकी से, जो कि सब में ज्यादा खतरनाक बात होती है । शेर का सामना शेरों की तरह हमने किया, फिर सांप ने आकर पीछे से हमें काटा । मैं इसलिए आपको याद दिलाता हूं यह कि फिर ऐसे सांप फैले हुए हैं जो कि पीछे से आकर काट सकते हैं जो हमको कमजोर करते हैं, जो हमें जलील करते हैं और यह सब जो हमने इतने जमाने में किया कराया उसको नाश करने की पूरी कोशिश करते हैं ।हम और आप यहां जमा हुए हैं इस दिन को कुछ पुराने जमाने के तरफ देखने। , कुछ आज के सवालों का तकाजा हमारे सामने, कुछ एक झलक भविष्य की जिधर हम जा रहे हैं क्यों कि हमने एक बड़ी यात्रा का इन्तजाम किया और स्वराज्य की यात्रा खतम हुई तो उससे बड़ी उससे मुश्किल सफर का इन्तमाम किया, जिस सफर में इस मुल्क के 36-37 कराड़ आदमियों को सभों का जाना है । मिलकर जाना है। हाथ में हाथ मिलाकर ताकि जो सब खुशहाल हों, ताकि उनकी मुसीबतें कम हों, ताकि जो जिन्दगी की जरूरतें हैं वो हरेक को मिलें ताकि जो हमारे होनहार बच्चे हैं जिनके ऊपर गुलामी का साया कभी नहीं पड़ा जो पैदा हुए हैं आजाद हिन्दुस्ताब में, वो हमेशा आजाद रहें, उनका सिर ऊंचा रहे, खुशहाल रहे और अपनी और मुल्क की तरक्की कर सें । यह हमने सोचा और इस रास्ते पर हम चले और रास्ते में हजार आई अड़चन, हजार मुसीबतें कभी सैलाब आकर हमें बहा देता, कभी एक रेगिस्ताब की तरह से हालत हो जाती, कभी बारिश ज्यादा हो, कि उसको सम्हालना मुश्किल कभी न हो तो उससे भी बदतर । यह हालत हुई । बरसों से आप जानते हैं कि किस मुसीबतों का इस मुल्क ने सामना किया, सामना किया, तकलीफ हुई, परेशानियां हुई लेकिन हिन्दुस्ताब का सिर तो नहीं झुका । क्योंकि आखिर में जैसे कि वो एक

इम्तहान का जमाना था, पुराना जमाना, जब कि हमने एक साम्राज्य का मुकाबला किया था, उससे कड़ा यह जमाना आ गया, हमारे इम्तहान का । कहां तक हम मुसीबत में मिलकर रह सकते हैं, कहां तक हम मिलकर काम कर सकते हैं, कहां तक हम इस और मंजिल को भी पार कर सकते हैं । यह आया और ऐसे मौके पर जब आपस में फूट हो, आपस में लड़ाई हो, हाथ उठायें एक इंसान दूसरे के लिए, दूसरे के ऊपर, तब क्या उसके मायने हैं क्या हम अपने पुराने सबक भूल गए, क्या हम गान्धी जी को भूल गये । क्या हम हजारों बरसों की हिन्दुस्तान की तारीख को भूल गये। क्या जो हमारा हम भविष्य हैं जिसके लिए हम काम कर रहे हैं उसको भूल गये क्याहम अपने बच्चों को भूल गये । क्या याद रहा हमें जब हम एक दूसरे पर हाथ उठाते हैं और झगड़ा फिसाद करते है,महज किसी सियासी बात को हासिल करने को, या जो कुछ भी उसकी वजह हो मैं नहीं जानता, क्या बात क्या है । तो आपके सामने में खड़ा होता हूं और आप यहां आये खुशी मनाने, जरूर दिल में खुशी है लेकिन दिल में रंज भी है कि ।। बरस बाद ऐसी बातें हो जो कि हिन्दुस्तान के बाज हिस्सों में हो रही हैं और आज के दिन हो रहा है । जब कि झगड़ा फिसाद करते हैं और जलाते हैं और एक दूसरे को मारते हैं तो हमें इससे आगाह होना है । लोगों की गफलत से । मैं यहां नहीं खड़ा हुआ हूं किसी को बुरा कहना, बुरा भला कहने, बुरा भला कहना । हमारा काम यह नहीं है । यहां मैं आपके सामने नहीं खड़ा हुआ हूं किसी एक दल के तरफ से, किसी पार्टी के तरफ से, बल्कि एक मुसाफिर की तरह से खड़ा हुआ हूं आपके सामने आपका हम सफर, इस मुल्क के करोड़ों आदमियों के और आपसे और मुल्क के रहने वालों से यह दरख्वास्त करने, दरख्वास्त करने की हम जरा दिल में अपने देखें और अपने को समझायें और औरों को समझायें कि हमें क्या इस वक्त हमारा फर्ज क्या है । कर्तव्य क्या है, कुछ भी कर्तव्य हो, कुछ भी पालिसी हो, कुछ भी नीति हो, जाहिर है कि उसमें हम कामयाब एक ही तरह से हो सकते हैं । कि हम मिलकर शान्ति से अहिंसा तरीके से काम करें । जाहिर है मोटी बात है।

नहीं तो हमारी सारी ताकत जमा हो जाती है एक दूसरे के खिलाफ अगर हमारी राय में फर्क है तो हम एक दूसरे को समझायें, एक दूसरे को अपनायें और कोई जरिया नहीं है इस मुल्क में नहीं है । चाहते हम यह हैं हम लम्बी आवाज से दुनियां से बातें कहा करते हैं और नेक सलाहें देते हैं और पंचशील का झण्डा हमने उठाया और और लोगों की तवज्जोह इधर हुई और मुल्कों पर एक असर उसका हुआ । लेकिन फिर कभी कभी अपने मुल्क की तरफ देखें कि क्या यहां हो रहा है, सिर झुक जाता है, शरम आ जाती है । किस तरह से हम औरों को नेक सलाह दें । जब हम अपने को नहीं पूरी तौर से नहीं सम्हाल सकते तो फिर मेरी यह आपसे दाख्वास्त है और मुल्क में सभों से दरख्वास्त है कि और सवालों पर हम गौर करें जरूर, और रास्तों पर हम चलें लेकिन पहली बुनियादी बात यह है कि हम अपने को सम्हालें, हम ऐक दूसरे से लड़ाई का सिलसिला छोड़, हम यह समझ लें कि हिन्दुस्तान में न आजादी है, न समाजवाद है, न प्रजातंत्र है, अगर हम लड़ाई झगड़ा करके फैसले किया चाहते हैं कोई भी आपकी राय हो, आप उसको तय करेंगे लड़ाई की धमकियां दे के, जिससे आप लड़ेंगे, वो आपसे लड़ेगा, न आप हासिल करेंगे न वो हासिल करेगा । मतलब। जैसे आजकल की दुनियां का हाल हो गया है कि बड़े-बड़े मुल्क ब-हथियार और एटम बम और गोले ले के बैठे हैं, दुनियां को तबाह कर सकते हैं, यह ताकत हरेक में है लेकिन दुनियां के सम्हालने की ताकत लड़ाई के जरिए से किसी में नहीं है । वो अमन के जरिये से ही है । हल्के-हल्के यह बात उनके सामने आती है, कि लड़ाई से सारी दुनियां तबाह होगी, फिर भी डर के मारे हर वक्त बैठे हैं लड़ाई की तैयारी करने और अभी आप जानते हैं पिछले चन्द जमाने में और आजकल भी काफी खतरनाक हालत इधर पश्चिमी एशिया के मुल्कों में हुई । अभी तक वहां फौजे जमा हैं, अभी तक बहथियार लोग तैयार खड़े हैं, जाने किस वक्त क्या मौका हो तो हमें तैयार होना चाहिये लड़ाई के लिए । उम्मीद है कि वो नहीं होगी, और वह पुराना डर जरा कम हुआ है । आशा है

कि वो मसले वहां के हल हों और जो हमारे भाई हैं वहां के, उस मुल्क के रहने वाले वो भी पूरी तौर से आजादी से रह सकें, जो वहां के अरब मुल्क हैं जिन्होंने एक जमाने से अपनी आजादी की कोशिश की, लड़े और हल्के-हल्के कदम बढ़े । उम्मीद है कि उनको भी आजादी पूरी होगी और अपनी जिन्दगी जैसा वो चाहते हैं वैसा बसर सकेंगे और उसी दोस्ती के साथ । यह तो और दुनियां का हाल है और और दुनियां में याद रखिए, कुछ हिन्दुस्तान की वकत है । कुछ हिन्दुस्तान एक दानिशमन्द मुल्क समझा जाता है, एम समझदार मुल्क समझा जाता है । जो आसानी से बहक नहीं जाता, आसानी से गुस्से होकर गलत बात नहीं करता, आसानी से हाथ किसी पर नहीं उठाता । यह हमारे निस्बत अक्सर लोगों का ख्याल है । कहां तक यह सही है, कहां तक गलत, वो आप समझें । क्योंकि वो सही भी है और बात भी है । सही है, हमने इस जमाने में खासकर गान्धी जी के जमाने में इसकी जबरदस्त मिसालें दीं, अपने सब्र की अपने अहिंसा की मलत है जब हम खुद गलत करते हैं अपनी हरकतों से । तो इसलिए यह मेरी दरख्वास्त है आपसे उधर गुजरात के शहरों में, बाजवाब हमारे कहां के । एक ऐसे सूबे के जहां गांधी जी पैदा हुए, जो कि गान्धी जी के सबक, सब में ज्यादा वहां सिखाया, जहां के लोग काम काजी हैं, मेहनती हैं, त्यागी हैं, जहां के लोग हिन्दुस्तान के अजूबा लोगों में गिने जाते हैं, क्या हुआ, क्या बुरी हवा आयी, कि इस तरह से पागलपना लोगों में आये, वहां अपने को बदनाम करें, हिन्दुस्तान को बदनाम करें और गुजरात जो है एक अच्छी जगह है, और जगह भी यह चीज उठती है । हमें होशियार होना ... फिर यह बात आती है । इससे किसी कैसले से ताल्लुक नहीं, किसी नीति से नहीं । अलग अलग नीति हो, चलें आजाद मुल्क है हरेक का इख्तयार है अपने को अलग अलग आजाद ख्याल रखने का, औरों को समझाना, लेकिन किसी को इख्तयार नहीं जबरदस्ती हाथ से लाठी से बन्दूक से दूसरे की राय को बदलने की कोशिश करना, या फैसला कराना क्योंकि इसका नतीजा क्या है । इसका

नतीजा कोई फैसला नहीं है. इसका नतीजा तो तबाही है, हुल्लड़बाजी है, लड़ाई है और क्या हम इतने जमाने से इस हिन्दुस्तान की आजादी के लिए लड़ के और हासिल करके फिर हम इस खाई में खन्दक में, कुएं में गिरेंगे और अपने कमजोरियों के, और करने की बात है. हमारे नौजवान आजकल हैं, अच्छे हैं, एक खबरदस्त उनके सामने खज़ारा है भविष्य का, इस हिन्दुस्तान का चमकता हुआ भविष्य, जिसका बोझ वो उठायेंगे, आगे चलायेंगे, जिसके लिए उन्हें आजकल तैयार होना है, स्कूल में कालेज में, या जहां कहीं हों । लेकिन आज उनमें भी बहक जाते हैं, भूल जाते हैं इन बड़ी बातों को और छोटी बातों में फंसते हैं, छोटे झगड़ों में पड़ते हैं और इससे अपने को बेकार करते हैं, और मुल्क की भी कोई खिदमत नहीं करते । यह हमें सोचना है, यह सवाल बड़े हैं, सोचना है और समझना है किधर हम जा रहे हैं । जाहिर है कि अगर इतने हजार मुसीबतों का सामना करके हम यहां पहुंचे जहां आजकल हैं तो किसी की धमकी से, किसी की कमजोरी से यह काम छूटेगा तो नहीं । यह काम तो जारी रखना है और हिम्मत से हमें जारी रखना है चाहे किसी ही रुकावटें आयें, कितनी ही मुसीबतें आयें और चाहे हम भी कमजोर हो जायें तो अपनी कमजोरी को निकाल के पकड़ के फेंक देना है, और सिर ऊंचा करके फिर से आगे बढ़ना है तो ।। वर्ष का जमाना हुआ । बहुत बड़ा जमाना, एक मुल्क की जिन्दगी में नहीं है, फिर भी एक माकूल वक्त है और आप ।। बरस को देखिये । क्या हिन्दुस्तान की हालत थी । ।। बरस हुए या उसके पहले । क्या आज दुनियां की महफिलों में हालत है या घर में अपने हालत हैं । हजार शिकायतें हैं आपको, मुझे और मुल्क के रहने वालों को और आपकी और मुल्क की जो शिकायतें वो सही शिकायतें हैं, बहुत कुछ उनमें, कुछ गलत । एक मुसीबत हमारे ऊपर मुसीबत पे मुसीबत आती है । मैंने आपसे कहा, फसलें खराब

होने की, बाढ़ की, पानी न बरसने की, कात की । दाम बढ़ते हैं चीजों के, बढ़े हुए हैं आजकल । काफी मुसीबत है लोगों के लिए और अगर वो शिकायत करें तो मुनासिब है और जो है शिकायत करना उनका, मैं उससे इंकार नहीं करता । और अगर वो शिकायत करें इस बात की, कि ऐसी हालत में भी लोग ऐसे हैं, चाहे वो व्यापार करते हैं या कुछ जो लोगों की मुश्किलों से फायदा उठाते हैं अपने फायदे के लिए, जो कि बजाय इसके, कि इस वक्त मदद करें औरों की और एक बोझ हो जाते हैं और गलत रास्ते पर चलते हैं और चोरबाजारी होती है यह सब बातें । अगर आप शिकायत करें तो सही है आपकी शिकायत, क्योंकि जो ऐसा काम ऐसे मौके पर करें, और जो मुल्क की जनता को इस तरह से नुकसान पहुंचाये, हानि पहुंचाये क्या बात है यह । कहिए उनकी कमजोरी हो सकती है कमजोरी, लेकिन असल में जो भी आदमी करे ऐसे मौके पर जो मुल्क के साथ गद्दारी करता है और उसको समझना चाहिये कि बजाय इसके कि मुल्क की खिदमत करे, मुल्क को बढ़ाये वो और मुल्क के साथ गद्दारी करे तो फिर इसका नतीजा उसके ऊपर और मुल्क के ऊपर क्या होगा । और यह सवाल है बड़े हमारे सामने, दुनियां के सवाल है । और हम भी दुनियां के हिस्से है इसलिए भी उन सवालों में भी भाग लेना पड़ता है लेकिन असल हमारा सवाल हमारे मुल्क का है, हमारे घर का है । शहर का है, मौहल्ले का और हमारे पड़ौसी का और हमें, चाहे हम वहां कन्याकुमारी और रामेश्वर रहें दक्षिण में चाहे काश्मीर में, चाहे पूरब और पश्चिम, हम एक हैं, एक मुल्क है, जिसको कोई तोड़ नहीं सकता, जिसको हम किसी को तोड़ने नहीं देंगे । हम और आप हिन्दुस्तान के बाशिन्दे हैं, हिन्दुस्तान के नागरिक हैं, सिटीजन हैं, हम इस मौहल्ले के वाली नहीं है । और इस शहर के नहीं और इस प्रदेश के नहीं है और उत्तर के नहीं और दक्षिण के नहीं और पूर्व और पश्चिम के नहीं और यह बात सब समझ लें

क्योंकि जो इसके खिलाफ हाथ उठायेगा और हिन्दुस्तान की जनता को कमजोर करने की कोशिश करेगा, उसका हमें मुकाबला करना है चाहे कोई बाहर की ताकत हो या अन्दर की सिर उठायें । क्योंकि यह बात अव्वल बात है । यह पहली बात है, हिन्दुस्तान की एकता और हिन्दुस्तान की आजादी । क्योंकि अगर यह बात नहीं है तो हिन्दुस्तान की खुशहाली कैसे होगी । फिर खुशहाली का सवाल है जो हम कहते हैं कि हम अपने मुल्क को ले जायेंगे समाजवाद की तरफ । माना पैर हमारे फिसले, कमजोरी हमसे हुई, गलतियां हुई और होंगी गलती से कौन बच सकता है, लेकिन जिस चीज की जरूरत है वो यह हमारे दिल और दिमाग में एक आग जलती रहे, एक चीज हमें धकेलती रहे एक तरफ । अगर हम ठोकर खाकर कहीं गिरें तो ताकत हो फिर उठकर उठकर फिर आगे बढ़ने की । कोई लोग कुछ लोग क्या समझते हैं कि वो जमाना खतम हो गया जब कि हिम्मत की जरूरत थी, बहादुरी की । जब कि हम भी जोश दिखाते थी एक जबर्दस्त साम्राज्य की ताकत के, शान के खिलाफ । इस धोखे में कोई न पड़े, अभी इस मुल्क में जान है, और पहले ज्यादा जान है, गफलत में कभी हम पड़ जाते हैं हमारे लोग और उस गफलत में पड़कर बड़ी बाते भूल जाते हैं । शायद अच्छा है कि और और हमारे ऊपर सदमें हों, और हमारे ऊपर चोट हों, जो हमें फिर याद दिला दें कि हम क्या चीज हैं, हमारा मुल्क क्या है । क्या हमारा कर्तव्य है और फर्ज है और सही रास्ते पर हम लायें । इस दिन जो हम यहां आते हैं इस तारीख को, इस तारीखी किले के ऊपर, जो कि एक जमाने से निशानी हो गयी यह किला निशानी था हमारी गुलामी का और अब निशानी है हमारी आजादी का । जो यहां हम जमा होते हैं एक फर्ज अदा करने वाली नहीं, हालांकि एक फर्ज है तो फिर से याद दिलाने को अपने को, कि क्या हमने प्रतिज्ञा ली, क्या इकरार किया, क्या अहद नामे हमने लिए । आगे किस रास्ते पर हमें चलना है ताकि हम अपने इकरार को पूरा करें । इसलिए हम आते हैं, और उन लोगों की याद करने जिन्होंने हमें यहां तक पहुंचाया,

: 9 :

और खासकर याद करने उस महापुरुष की गांधी जी की, जिसने हमें रास्ता दिखाया । बहुत सारे बच्चे यहां हैं नौजवान भी हों जिन्होंने उनको देखा नहीं, जिनके लिए यह एक कहानी है, सारी हमारी आजादी की तहरीक एक कहानी हो गयी है, कहानी तो होगी, ऐसी कहानी जो सैकड़ों हजारों बरस रहे । लेकिन वो खाली कहानी नहीं है बल्कि एक सबक सामा है जिससे हमेशा हम सबक सीखें, और जब हम गलत रास्ते पर जाने लगें, याद करें उनको, और खासकर याद करें गांधी को, जिसने हमारे मुल्क को खड़ा किया और आजाद किया और उसके ऊपर अपनी जान न्योछावर की ।

जयहिन्द ।

मेरे साथ आप भी तीन बार मिलकर जयहिन्द कहें ।

(तीन बार जनता पंडितजी के साथ जयहिन्द पुकारती है ।